

उत्तराखण्ड में कड़े पंजीकरण मानदंडों के साथ समान नागरिकी संहिता लागू

चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड सरकार 26 जनवरी, 2025 को [समान नागरिकी संहिता \(UCC\)](#) लागू करने की तैयारी कर रही है, जिसमें व्यक्तिगत और नागरिकी मामलों से संबंधित पंजीकरणों के लिये कई अनिवार्य आवश्यकताएँ शामिल होंगी।

मुख्य बंदी

■ UCC पोर्टल

○ पोर्टल पर उपलब्ध सेवाएँ नमिनलखित हैं:

- विवाह, तलाक और लवि-इन संबंधों का पंजीकरण।
- लवि-इन रशितों की समाप्ति।
- बनिा वसीयत के उत्तराधिकार और कानूनी उत्तराधिकारी की घोषणा।
- वसीयतनामा उत्तराधिकार।
- अस्वीकृत आवेदनों के मामले में शकियात पंजीकरण और अपील।

■ व्यक्तिगत और सविलि मामलों के लिये वभिनिन आवश्यकताएँ शामिल हैं:

○ लवि-इन रलेशनशिपि पंजीकरण:

- मौजूदा और नए लवि-इन जोड़ों को अपने रशिते को पंजीकृत कराना होगा।
- आवेदकों को आयु, राष्ट्रियता, धर्म, फोन नंबर और पछिले संबंध की स्थिति का प्रमाण जैसे वविरण प्रदान करने होंगे।
- दोनों भागीदारों की तस्वीरें और घोषणाएँ अनिवार्य हैं।
- ऐसे रशितों में पैदा हुए बच्चों को **जनम प्रमाण-पत्र प्राप्त होने के सात दिनों के भीतर पंजीकृत कथिा जाना चाहिये।**

○ विवाह और तलाक पंजीकरण:

- पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिये UCC पोर्टल के माध्यम से विवाह और तलाक के लिये सख्त आवश्यकताएँ लागू की गई हैं।

○ वसीयत उत्तराधिकार:

- घोषणाकर्त्ताओं को अपना, अपने उत्तराधिकारियों और गवाहों का आधार से जुड़ा वविरण प्रस्तुत करना होगा।
- जालसाजी या वविाद को रोकने के लिये गवाहों को उत्तराधिकार घोषणा-पत्र पढ़ते हुए स्वयं की वीडियो रकिॉर्डिंग अपलोड करना आवश्यक है।

○ विवाह एवं रशितों के लिये शकियात तंत्र:

- कोई तीसरा पक्ष UCC पोर्टल पर शकियात के माध्यम से **विवाह या लवि-इन रलेशनशिपि पर आपत्त दिर्ज करा सकता है।**
- झूठे आरोपों का मुकाबला करने के लिये ऐसी शकियातों का सत्यापन **उप-पंजीयक** द्वारा कथिा जाएगा।

समान नागरिकी संहिता (UCC)

- समान नागरिकी संहिता भारत के सभी नागरिकों के लिये विवाह, तलाक, गोद लेने, वरिसत और उत्तराधिकार जैसे व्यक्तिगत मामलों को नयित्त्रति करने वाले कानूनों के एक समूह को संदर्भित करती है।
- समान नागरिकी संहिता की अवधारणा का उल्लेख [भारतीय संवधान](#) के अनुच्छेद 44 में [राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत](#) के रूप में कथिा गया है, जिसमें कहा गया है कि राज्य पूरे भारत में नागरिकों के लिये एक समान नागरिकी संहिता सुनश्चिति करने का प्रयास करेगा।
- हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि यह कानूनी रूप से लागू करने योग्य अधिकार नहीं है, बल्कि राज्य के लिये एक मार्गदर्शक सिद्धांत है।

क्या है

NEWS

समान नागरिक संहिता?

एक धर्मनिरपेक्ष कानून है जो किसी भी **धर्म या जाति** के सभी निजी कानूनों से ऊपर



देश में **हिंदू सिविल लॉ** के दायरे में हिंदुओं के अलावा सिख, जैन और बौद्ध आते

पाकिस्तान, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मलेशिया, सूडान, तुर्की और इजिप्ट जैसे **कई देशों में लागू**

संविधान के **अनुच्छेद 44** के तहत समान नागरिक संहिता को लागू करना राज्यों की जिम्मेदारी



गोवा में **साल 1961** से समान नागरिक संहिता लागू है

